इतिहास पुराण परम्परा
Itihas Purana Tradition

भारत में इतिहास लेखन की अवधारणा सर्वाधिक पुरानी है। वास्तव में यहाँ इतिहास लेखन की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितना कि वैदिक काल। इतिहास शब्द का प्रथम उल्लेख वैदिक वांगमय (ऋग्वेद) में मिलता है, जिसमें 'इत्यारव्यानम' और 'इत्यैतिहासिका:' शब्दों का उल्लेख है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास लेखन की परम्परा भारत में पुरानी है, जिसकी अपनी अवधारणा, विधा, शैली तथा स्वरूप था, जिसे आज की दृष्टि से नहीं आंका जा सकता। यही कारण है कि अनेक विद्वानों ने भारत को इतिहास लेखन से अपरिचित बताया है। पर, यह सोचना उचित प्रतीत नहीं होता कि भारत के लोगों में ऐतिहासिक अवधारणा का अभाव था, या उनकी अपनी ऐतिहासिक दृष्टि नहीं थी। भारतीयों के इतिहास लेखन की अपनी अवधारणा रही है, जो युग के अनुरूप चलती रही है।

~~इसमें संदेह नहीं कि~~ भारतीयों के इतिहास लेखन की सोच सर्वाधिक प्राचीन है। हमें भारतीय इतिहास लेखन का श्रीगणेश वैदिक साहित्य के वंश और गोत्र-प्रवर तालिकाओं से मिलने लगता है। कतिपय विद्वानों का मत है कि वेदों में इतिहास नहीं है। पर वैदिक ऋचाओं को ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करने वाले का निरुक्त में कहीं 'इत्यारव्यानम' और कहीं 'इत्यैतिहासिका:' कहा गया है। निरुक्त काल में संभवत: इतिहासकारों का एक वर्ग था, जो वेदों के इतिहास लेखन से परिचय था। अनेक स्थलों पर निरुक्तकार ने केवल 'तन्नेतिहास' माचक्षते, इत्याख्यानम् का उल्लेख कर इतिहास के पक्ष को प्रस्तुत किया है। वेदों में 'इतिहास' और 'आख्यान' शब्द उल्लिखित है, इन्हें भाष्यकार दुर्गाचार्य ने पर्यायवाची माना है। इसी प्रकार स्कन्द स्वामी ने भी 'आख्यान' और 'इतिहास' को पर्यायवाची माना है।

वैदिक साहित्य में 'इतिहास पुराण' का उल्लेख मिलता है। इसमें संदेह नहीं कि वैदिक काल में इतिहास के अनेक अनुवांगिक उपकरण मौखिक परम्परा में विद्यमान थे, जिनका विकास कालान्तर में 'इतिहास पुराण' परम्परा के अन्तर्गत हुआ। विश्वम्भर शरण पाठक का मत है कि भारत में प्राचीनतम ऐतिहासिक साहित्य के रूप में कुछ बिखरे हुए वैदिक मंत्र हैं

जो समकालिन राजाओं के सैनिक अभियानों की प्रशंसा में लिए गए हैं। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के 'वंश मण्डलों' के आधार पर हमें ऋषियों के ऐतिहासिक वंश परम्परा का ज्ञान होता है।

वैदिक इतिहास लेखन में 'गाथा परम्परा' का अपना योग है। ऋग्वेद में गाथा, गाथ, गाथानी, गाथन, ऋगुगाथ आदि के अनेक रूप मिलते हैं। V.S. पाठक ने गाथा और नाराशंसी को एक ऐतिहासिक प्रकृति का साहित्य माना है। कुछ प्राचीन एवं समसामयिक घटनाओं के उल्लेख वैदिक साहित्य के नाराशंसी गाथाओं में मिलते हैं। इनमें आख्यानिक तत्वों का योग मिलता है। गाथा परम्परा बौद्ध तथा जैन साहित्य में भी मिलती है।

हमें वैदिक कालीन विचारों की दो धारायें - वेद धारा, इतिहास पुराण धारा दिखाई पड़ती है। इनमें दूसरी इतिहास-पुराण धारा में पर्याप्त ऐतिहासिक विवरण मिलता है। इसे यास्क ने 'ऐतिहासिक' कहा है। सामान्यतया गाथा और नाराशंसी इतिहास और पुराण के साथ वर्गीकृत है। V.S. पाठक का विचार है कि गाथा और नाराशंसी की ऐतिहासिक रचना का का रूप ऋग्वैदिक काल में मौखिक परम्परा के रूप में विद्यमान थी। गाथा साहित्य की धारा लोक जीवन में परम्परागत ढंग से प्रचलित थी। इस परम्परा का प्रचलन आगे भी होता रहा। इनके ऐतिहासिक रूपों का विकास वशिष्ठ और भृगुवांगिरस द्वारा भी किया गया।

उत्तर वैदिक काल की इतिहास की मौखिक परम्परा को पाँच रूपों - गाथा, नाराशंसी, आख्यान, इतिहास और पुराण में विभाजित किया जा सकता है। गाथा मूलतः गेय थे, जो धीरे-धीरे साहित्य वर्ग में विकसित हुए। नाराशंसी और गाथा उन गीतों के समूह थे, जो राजाओं व ऋषियों के वीरोचित कार्यों व उनकी कीर्तियों के लिए गाये जाते थे। गाथा का संबंध इतिहास पुराण से रहा है। कालान्तर में वैदिक गाथा साहित्य को इतिहास में समायोजित कर लिया गया। फलतः वैदिक गाथाओं को इतिहास पुराण की परम्परा में स्वीकार कर लिया गया। अनेक इतिहासकारों ने नाराशंसी को प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन का अंग मान लिया है। निरुक्तकार ने लिखा है कि जिस मंत्र से नरों की स्तुति हो, वह नाराशंस मंत्र है। ब्राह्मण ग्रंथों में उल्लिखित 'नाराशंसी' को इतिहास विधा के एक अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। ब्राह्मण काल में इतिहास पुराण और गाथा ग्रन्थों के समान नाराशंसी ग्रंथ भी विद्यमान थे। कालान्तर में इसे ऐतिहासिक साहित्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया। निरुक्त के अनुसार ऋग्वेद की अनेक ऋचाएं आख्यानों में आवृत हैं।

ओल्डनबर्ग का विचार है कि ऋग्वेद 'आख्यान' गद्य: पद्यात्मक थे। पद्य भाग रोचक होने से बचा रह गया, जो कालान्तर में चम्पू काव्यों का आधार बना। ये अभिनेय हैं। इनके संवाद नाटकीय हैं। V.S. पाठक की सोच है कि कालान्तर में ये ऐतिहासिक नाटकों व महाकाव्यों के स्त्रोत बने। भागवतदत्त का कथन है कि आख्यान शास्त्र अतिपुरातन है। ब्राह्मण ग्रंथों में उद्धृत आख्यान लोक भाषा में है, जिसमें लोक परम्परा का भान होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभ में ये आख्यान लोक जीवन में मौखिक रूप में प्रचलित थे। तदन्तर इनका विकास हुआ। इसी प्रकार आख्यायिकाओं का भी विकास हुआ।

पुराण को भारतीय संस्कृति के अक्षयदण्ड के रूप में माना गया है। ऋग्वेद में 'पुराण' शब्द अनेक स्थानों पर उल्लिखित है। यास्क ने पुराण की व्युत्पति 'पुरानवं भवति' जो प्राचीन होकर भी नया होता है, किया है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार 'पुराऽनत् अभूत' अर्थात् प्राचीन काल में ऐसा हुआ था। वायु पुराण के अनुसार 'पुराअनति' अर्थात प्राचीनकाल में जो जीवित था। इस प्रकार पुराण का वर्ण विषय प्राचीन काल से सम्बद्ध था। उत्तरवैदिक कालीन ग्रन्थों में इतिहास और पुराण का उल्लेख साहित्य की शाखाओं के रूप में अथवा उपवेद या उपवेदों के रूप में किया गया है। 'इतिहास पुराण' शब्द अनेक सन्दर्भों में उल्लिखित मिलता है। ये शब्द अति ध्वनिष्ट हैं। 'इतिहास पुराण' को पंचम वेद कहा गया है। 'इतिहास पुराण' की निकटता को भागवतदत्त ने इस प्रकार स्पष्ट किया है - "इतिहास आत्मा है और पुराण उसका शरीर। इस पुराण शरीर के बिना इतिहास का क्रम स्मरण नहीं रह सकता। पुराण इतिहास की सूची है। इतिहास को सुरक्षित रखने वाली ऐसी बहुमूल्य देन विश्व वाङ्मय में अन्यत्र नहीं है।

उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद में पुराण शब्द का प्रयोग अनेक ऋचाओं में मिलता है। इन स्थलों पर 'पुराण' शब्द मात्र प्राचीनता का द्योतक है। अथर्ववेद में 'पुराण' शब्द इतिहास गाथा तथा नाराशंसी शब्दों के साथ प्रयुक्त हुआ है। यहाँ पर 'पुराण' शब्द प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के रूप में प्रयुक्त प्रतीत होता है। वास्तव में यहां से इतिहास लेखन की संरचना में गाथा, नाराशंसी एवं पुराण की जो मौलिक परम्परा प्रचलित थी वह इतिहास - पुराण परम्परा के रूप में यहीं से

विकसित होती है। राजबली पाण्डेय का कथन है कि "छान्दोग्य-उपनिषद में इतिहास और परम्परा (इतिहास-पुराण) को पाँचवाँ वेद (पंचम वेदानांवेद) कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि इतिहास को ज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा माना जाता था और इसे वेदों के समान ही सम्मान प्राप्त था। गोपथ ब्राह्मण में पंचम वेद का उल्लेख मिलता है, जिसमें इतिहास वेद तथा पुराणवेद भी सम्मिलित है। देखा जाय तो ब्राह्मण काल में 'इतिहास' वेद के समान मान्य था। संभवतः अब तक इतिहास की मौलिक परम्परा स्थिर हो गई थी। V.S. पाठक का विचार है कि "इतिहास (लेखन) की मौलिक परम्परा उत्तर वैदिक काल में निश्चित रूप से पाँच रूपों - गाथा, नाराशंसी, आख्यान, इतिहास और पुराण से प्रचलित थी।" शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि "अनुशासन, विद्या, वाकोवाक्य, इतिहास पुराण, गाथा तथा नाराशंसी के स्वाध्याय से देवों को मधु से पूर्ण आहुतियाँ प्राप्त होती हैं। ब्राह्मण काल के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि इस समय इतिहास के अध्ययन का प्रचलन था। अतः इस काल में इतिहास लेखन समसामयिक सांच के रूप में होता था।

इसी प्रकार आरण्यकों और उपनिषदों के काल में इतिहास-पुराण की परम्परा पर्याप्त रूप में विकसित हो गई थी। तैतिरीय आरण्यक में 'ब्राह्मणानि इतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा, नाराशंसीरिति' का उल्लेख मिलता है। अब तक इतिहास की महत्ता इतनी बढ़ गई थी कि छान्दोग्य उपनिषद में इतिहास पुराण को पंचम वेद के नाम से उल्लिखित किया गया। इतिहास पुराण की परम्परा बराबर चलती रही। हमें सूत्र ग्रन्थों में भी इतिहास पुराण की परम्परा मिलती है। इसी प्रकार महाकाव्यों में भी इतिहास पुराण परम्परा मिलती है। रामायण रचयिता वाल्मीकि ने लिखा है कि "सुमन्त ने दशरथ से कहा कि पुराणों में जो कुछ सुन रखा है वह श्रवण कीजिए।" इससे स्पष्ट होता है कि सुमन्त पुराण के जानकार थे। कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी इतिहास पुराण परम्परा मिलती है। कौटिल्य ने लिखा है कि पुराण इतिवृत्ति आख्यायिका, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र आदि की गणना इतिहास के अन्तर्गत माननी चाहिए। राजा को दिन के उत्तरार्द्ध में इतिहास सुनना चाहिए। इस काल के प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति में सूत व पुरोहित के साथ ही पुराणज्ञ (पुराणवेत्ता-पौराणिक

इतिहासज्ञ) भी होते थे। यह पुराणज्ञ राजा द्वारा नियुक्त होता था, जो एक हजार पण वेतन पाता था। यह परम्परा मौर्य ही नहीं शुंग काल में भी व्याप्त थी। धर्म शास्त्रों में हमें इतिहास पुराण परम्परा का प्रतिपादन विशेष रूप से मिलता है। पुराणों का उल्लेख ऋग्वैदिक संहिताओं से शुरू होकर आधुनिक काल तक प्रवाहमान रहा है। अतः इसकी परम्परा समय के साथ किसी रूप में निरन्तर बनी रही। इन पुराणों की सर्जना में गाथा, आख्यान, कल्पशुद्धि आदि को आधार बनाया गया है। जब पुराणों के विषय व लक्षण निश्चित हो गये तब इतिहास पुराण से अलग हो गया। पुराण परम्पराओं में समा गया, इतिहास का स्वतंत्र विकास हुआ।